

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट साहित्य, व्याख्यान 14, पुराना/नया पॉल और परिचय। रोमनों को

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन का न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, न्यू एंड ओल्ड पॉल पर व्याख्यान 14 और रोमनों की पुस्तक का एक परिचय है।

ठीक है, चलो आगे बढ़ें और आगे बढ़ें।

आज मैं अधिनियमों की पुस्तक से आगे बढ़ना चाहता हूँ और अगले कुछ हफ्तों के लिए कम से कम पॉल के पत्रों को देखना शुरू करना चाहता हूँ। जैसा कि हमने कहा, एक अर्थ में अधिनियम शेष नए नियम के परिचय में एक परिवर्तन प्रदान करता है जिसमें प्रमुख पात्र और आंकड़े जो अधिनियम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अंततः पत्रों के लेखक बन जाते हैं, विशेष रूप से पॉल जो इनमें से एक है अधिनियमों में प्रमुख व्यक्ति। ऐसे में एक्ट्स के तुरंत बाद उनके पत्रों का संग्रह मिलना और न्यू टेस्टामेंट के बाकी हिस्सों पर हावी होना स्वाभाविक है।

तो आज हम फिर से रोमन से शुरू होने वाले उन अक्षरों को देखना शुरू करेंगे। हम उनका विहित क्रम में अनुसरण करेंगे, जरूरी नहीं कि जिस क्रम में वे लिखे गए हों, बल्कि हम उस क्रम का पालन करेंगे जिसमें वे नए नियम में घटित होते हैं।

तो, हम रोमनों से शुरू करेंगे, लेकिन आइए प्रार्थना से शुरू करें। पिता, मैं आपको एक बार फिर से धन्यवाद देता हूँ कि आपने इतनी विनम्रता से पुराने और नए टेस्टामेंट के रूप में खुद को प्रकट किया और हमें विश्लेषण करने के बारे में सोचने और उसी रहस्योद्घाटन को पढ़ने का सौभाग्य मिला है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम इसे हल्के में नहीं लेंगे, आपके वचन में स्वयं के रहस्योद्घाटन का अनुग्रहपूर्ण उपहार, और हम इसे यथासंभव पूर्ण और सटीक रूप से समझने की कोशिश करने के लिए अपनी सभी मानसिक ऊर्जा और अपने निपटान में सभी उपकरण लाएंगे। . यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, तो प्रेरित पॉल और यह पॉल अपने सिर पर हाथ रखकर नए नियम की परीक्षा देने के बाद है। जैसा कि मैंने कहा, पॉल के पत्रों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है, बल्कि आम तौर पर उनकी लंबाई के क्रम में व्यवस्थित किया गया है। तो, रोमियों के पहले आने का कारण यह नहीं है कि यह सबसे पहले लिखा गया था, बल्कि इसलिए कि यह पॉल द्वारा लिखा गया सबसे लंबा पत्र था।

पौलुस ने जो पहला पत्र लिखा वह या तो गलातियों को या 1 थिस्सलुनिकियों को जाएगा। मेरी प्राथमिकता 1 थिस्सलुनिकियों के लिए होगी, और मैं आपको बाद में सेमेस्टर में बताऊंगा कि ऐसा क्यों है। लेकिन इससे पहले कि हम पॉल के पत्रों को विशेष रूप से देखें, केवल पत्रों का एक संक्षिप्त परिचय और एक व्यक्ति के रूप में पॉल हमें उनके पत्र लेखन के बारे में थोड़ा और समझने में मदद कर सकते हैं।

लेकिन सबसे पहले, जब हम पॉल के पत्रों के बारे में सोचते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि नए नियम के विद्वान पॉल के पत्रों की सामयिक प्रकृति को क्या कहते हैं। कभी-कभार इसका मतलब यह नहीं है कि उसने उन्हें मौके-मौके पर लिखा। उनके पत्रों की सामयिक प्रकृति का मतलब था कि पॉल के पत्र विशिष्ट स्थितियों और समस्याओं के जवाब के रूप में उभरे।

इसलिए, फिर से, प्रेरितों के काम की पुस्तक में वापस जाते हुए, हम उन सभी स्थानों के बारे में पढ़ते हैं जहाँ पॉल ने दौरा किया था, और उन सभी चर्चों के बारे में जो उसने स्थापित किए थे। यह उन चर्चों में उत्पन्न हुई कुछ समस्याओं और स्थितियों की प्रतिक्रिया में था कि पॉल ने बैठकर ये पत्र लिखे। इसलिए, हमारे पास पॉल द्वारा सोची गई हर बात का संपूर्ण धर्मशास्त्र नहीं है।

हमारे पास कोई धार्मिक पाठ्यपुस्तक नहीं है जो किसी भी मुद्दे पर पॉल की सोच को दर्शाती हो। इसके बजाय, हमारे पास बहुत विशिष्ट परिस्थितियों और समस्याओं को संबोधित करने वाले बहुत ही प्रासंगिक विशिष्ट पत्रों की एक श्रृंखला है जो पॉल की सोच और उनके धर्मशास्त्र में एकमात्र खिड़की हैं। तो, इसका मतलब यह है कि हमें उसके पत्रों की सामयिक प्रकृति के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है।

हमें उन परिस्थितियों, स्थितियों और समस्याओं से अवगत होने की आवश्यकता है जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। अब, दो सामान्य उपमाएँ हैं जो मेरे लिए मौलिक नहीं हैं, लेकिन आप उन्हें पॉल के पत्रों या पॉल के विचारों के कई उपचारों में संदर्भित पाते हैं। कुछ उपमाएँ हैं जो शायद हमें यह समझने और समझाने में मदद करती हैं कि हमें पॉल के पत्रों को किस प्रकार देखना है या उन्हें पढ़ना कैसा है।

दो उपमाएँ हैं फ़ोन पर बातचीत और मेल पढ़ना, किसी के मेलबॉक्स में जाना और किसी और का मेल पढ़ना, या कोई ऐसा पत्र पढ़ना जो आपके लिए नहीं था। तो, पहला, पॉल के पत्रों को पढ़ना फोन पर बातचीत के एक छोर को पढ़ने जैसा है, या फोन पर बातचीत के एक छोर को सुनने जैसा है जब आप किसी और को फोन पर बात करते हुए सुनते हैं, कभी-कभी मैं अक्सर अपनी पत्नी के साथ ऐसा करता हूँ या कभी-कभी मेरी बेटी जब वे फ़ोन पर बात कर रही होती हैं। बस यह सुनकर कि वे क्या कहते हैं और कैसे कहते हैं, आप यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि वे किससे बात कर रहे हैं और आप यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि वे किस बारे में बात कर रहे होंगे।

केवल बातचीत के एक छोर को सुनने से, आप यह नहीं सुन सकते कि दूसरी ओर क्या चल रहा है। लेकिन आप यहां जो करते हैं उसके आधार पर आपको पंक्ति के दूसरे छोर पर जो चल रहा है उसे फिर से बनाने का प्रयास करना होगा। क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे आप यह समझ सकते हैं कि आप वास्तव में क्या सुनते हैं।

और पॉल के पत्र भी उसी के समान हैं। पॉल के पत्र पढ़कर, आप फोन पर बातचीत का एक छोर सुन रहे हैं। आप केवल वही सुनते हैं जो पॉल कह रहा है।

आप नहीं जानते कि पंक्ति के दूसरे छोर पर क्या हो रहा है। इसलिए, आपको स्वयं पत्रों को पढ़ने के आधार पर, यह निष्कर्ष निकालने और पुनर्निर्माण करने का प्रयास करना होगा कि पॉल ने सबसे अधिक संभावना किस पर प्रतिक्रिया दी थी। वह किसे लिख रहा था? वह कौन सी स्थिति थी जिसे वह संबोधित कर रहे होंगे? दूसरा किसी और का मेल पढ़ रहा है।

फिर, यदि आपको कोई ऐसा पत्र मिला है जो आपके लिए नहीं था और आपने उसे पढ़ा है, तो इस बात की अच्छी संभावना है कि आप उसके बड़े हिस्से को नहीं समझ पाएंगे क्योंकि आपको बाकी बातचीत की जानकारी नहीं है या लिखने वाला दूसरा पक्ष कौन था। यह या स्थिति क्या थी, दोनों के बीच कोई रिश्ता था, या वह समस्या जिसके कारण यह पत्र लिखना पड़ा। और इसलिए, आपके पास केवल पत्र ही है। और पॉल के पत्रों को पढ़ने के साथ भी यही सच है।

हमारे पास केवल उनके पत्र हैं, संचार के उनके पक्ष का रिकॉर्ड है। और इसलिए उसके आधार पर, हम यथासंभव पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं कि रोम के चर्च या गैलाटिया के चर्च या इफिसुस या कुलुस्से के चर्च या किसी अन्य शहर में क्या चल रहा था जिसे पॉल ने या थिस्सलुनीके में लिखा था। वे कौन सी परिस्थितियाँ या स्थिति या समस्या या मुद्दा था जिसके कारण पॉल को यह पत्र लिखना पड़ा? इसलिए, इसके जवाब में, यह हमें क्या याद दिलाता है, हमें पॉल के पत्रों से एक प्रशंसनीय परिदृश्य का पुनर्निर्माण करना चाहिए जो हमें उसके पत्रों की व्याख्या करने में मदद करता है।

तो, एक तरह से, यह एक प्रकार का चक्र है। हम यह जानने की कोशिश करने के लिए पॉल के पत्रों को देखते हैं कि हम पाठकों और उनकी परिस्थितियों और समस्याओं के बारे में क्या जान सकते हैं, और फिर हम उसका उपयोग पत्र की व्याख्या करने के लिए करते हैं। लेकिन फिर भी, पत्रों को कुछ अर्थों में बहुत विशिष्ट स्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए।

और मुझे उम्मीद है कि मैं यह प्रदर्शित करने में सक्षम होऊंगा कि पॉल के पत्रों के कई खंड हैं जिनका कोई मतलब नहीं है जब तक कि हम इस बारे में कुछ न समझ लें कि पॉल क्या संबोधित कर रहा था। मुझे लगता है कि पॉल के पत्रों में ऐसे कई खंड हैं जिनका हम जब उपयोग करते हैं तो अधिक अर्थ रखते हैं, और जिस तरह से हम किसी पाठ को पढ़ते हैं उसमें एक बड़ा अंतर होता है। शायद हम समाप्त हो जाएंगे, कुछ खंड हैं जहां मैं प्रदर्शित करने जा रहा हूँ कि पॉल किस स्थिति और समस्या को संबोधित कर रहा है, यह समझकर हमें जो विश्वास दिलाया गया है, उससे हमें बहुत अलग तरीके से पढ़ना चाहिए।

इससे अक्सर फर्क पड़ सकता है कि हम अक्षरों की व्याख्या कैसे करते हैं। हां। सही।

कुछ पत्रों में संकेत हैं कि शायद पॉल यह नहीं मानता कि हर किसी को एक विशिष्ट स्थिति की जानकारी होगी। उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ में, विशेष रूप से कुलुस्सियों को लिखे पत्र में, वास्तव में वह उनसे कहता है कि वह अपना पत्र किसी और को, लौदीसिया शहर में भेज दें। इसलिए, पॉल के कुछ पत्रों में, एक संकेत है कि इसे केवल तत्काल दर्शकों से अधिक, जिनके लिए इसका इरादा था, से अधिक पढ़ा जाना था।

ऐसे अन्य पत्र भी हैं जो कहीं अधिक संदर्भ-विशिष्ट प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों में, पॉल कई मुद्दों को संबोधित करता है कि स्थिति की प्रकृति क्या हो सकती है, इसका पुनर्निर्माण करना थोड़ा अधिक महत्वपूर्ण लगता है। लेकिन ऐसे अन्य पत्र भी हैं जहां पॉल का इरादा था कि इसे केवल विशिष्ट चर्च द्वारा नहीं पढ़ा जाएगा, बल्कि इसे प्रसारित किया जाएगा और अधिक व्यापक रूप से पढ़ा जाएगा।

और फिर पहले से ही, पहले से ही, दिलचस्प बात यह है कि पहली शताब्दी के अंत तक, जाहिरा तौर पर, याद रखें कि हमने 2 पीटर के एक पाठ को देखा था, जब हम कैनन के बारे में बात कर रहे थे, जहां लेखक, 2 पीटर, पॉल के एक संग्रह को संदर्भित करता है पत्र. तो कम से कम पहली शताब्दी के अंत तक, पॉल के पत्रों का एक संग्रह पहले से ही काफी व्यापक रूप से प्रसारित हो रहा था। हमें यकीन नहीं है कि कितने, लेकिन आप सही हैं।

तो इसे संतुलित करने की आवश्यकता है, जिन विशिष्ट परिस्थितियों को इन पत्रों को संबोधित किया गया था, उन्हें इस तथ्य से संतुलित करने की आवश्यकता है कि कुछ उदाहरण प्रतीत होते हैं, जैसे कि कुलुस्सियों की पुस्तक, जहां उन्होंने अपने पत्र को सिर्फ से अधिक व्यापक रूप से प्रसारित करने का इरादा किया था कुलुस्से के चर्च में। फिर थोड़ा और अधिक विशिष्ट बनने के लिए और फिर से, बहुत, बहुत संक्षेप में उस व्यक्ति, स्वयं पॉल के बारे में थोड़ी बात करें। मेरा मतलब है, प्रारंभिक ईसाई धर्म में यह व्यक्ति या चरित्र कौन है, और उसके नाम वाले इन सभी पत्रों को नए नियम में शामिल करने का क्या कारण है? सबसे पहले, याद रखने वाली पहली बात यह है कि पॉल वास्तव में दो अलग-अलग दुनियाओं का नागरिक था, वस्तुतः।

सबसे पहले, और कई मायनों में पॉल को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि उसकी यहूदी दुनिया थी। पॉल का पालन-पोषण एक धर्मनिष्ठ यहूदी, एक फरीसी के रूप में हुआ था, और यद्यपि वह स्पष्ट रूप से एक फरीसी स्कूल से संबंधित था जो कभी-कभी थोड़ा अधिक उदार था, पॉल ने अपने यहूदी धर्म को जीने के तरीके में बहुत ही कट्टरपंथी और दक्षिणपंथी अभिनय करना शुरू कर दिया। . और इसे इस तथ्य से देखा जा सकता है कि पॉल ने स्वयं अपने पत्रों में इस तथ्य का उल्लेख किया है कि उसने चर्च को नष्ट करने का प्रयास किया था।

वह इस नए-नए धर्म, जिसे हम ईसाई धर्म कहते हैं, को लेकर इतने चिंतित थे कि उन्होंने इसे यहूदी धर्म और कानून के प्रति आज्ञाकारिता के लिए इतना खतरा माना कि वह इसे खत्म करने के लिए कुछ भी करने जा रहे थे। तो, पॉल जोशीला प्रकार का था, एक फरीसी, लेकिन जोशीला प्रवृत्ति वाला था। यदि आपको याद हो जब हमने फरीसियों और कट्टरपंथियों के बारे में बात की थी, तो पॉल एक प्रकार का कट्टर कट्टर प्रवृत्ति वाला फरीसी था।

कानून के प्रति उत्साह के कारण, वह ईसाइयों को भी खत्म कर देगा क्योंकि उसने ईसा मसीह में इस नए विश्वास को अपने पैतृक धर्म के लिए खतरे के रूप में देखा था। तो, पॉल पूरी तरह से सभी यहूदी प्रशिक्षणों का एक यहूदी था, और जाहिर है, यह इस बात से परिलक्षित होता है कि उसने अपने लेखन में किस हद तक पुराने नियम से उधार लिया है। लेकिन साथ ही, पॉल रोम का नागरिक भी था।

और इसका मतलब यह है कि पॉल स्पष्ट रूप से शायद ग्रीको-रोमन प्रशिक्षण और पालन-पोषण से परिचित होगा। पॉल परिचित होगा, जाहिर है उसने आम भाषा, उस समय की ग्रीक भाषा में लिखा था। लेकिन साथ ही, पॉल अक्सर अपनी नागरिकता का उपयोग करता था।

वह इसका फायदा उठाने के लिए काफी इच्छुक था। जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं तो एक-दो बार उनकी रोमन नागरिकता ने उन्हें कुछ गंभीर समस्याओं से बाहर नहीं निकाला। तो, पॉल दो दुनियाओं का व्यक्ति था, स्पष्ट रूप से यहूदी धर्म और कानून के सख्त पालन की दुनिया में पला-बढ़ा, एक कट्टर प्रकार का फरीसी, लेकिन साथ ही एक रोमन नागरिक और रोमन दुनिया का एक बच्चा भी था। .

अब, यह सब उस घटना तक जारी रहा जिसके बारे में हम प्रेरितों के काम अध्याय 9 में पढ़ते हैं, और वह है पॉल का रूपांतरण। और अधिनियम अध्याय 9 के अलावा, पॉल स्वयं एक अन्य स्थान पर अपने रूपांतरण को बहुत स्पष्ट रूप से संदर्भित करता है, और वास्तव में हम शायद दो अन्य स्थान कह सकते हैं, लेकिन दूसरा अधिनियम अध्याय 1 है। और जो मैं संक्षेप में चर्चा करना चाहता हूँ वह यह है कि पॉल के रूपांतरण का पारंपरिक दृष्टिकोण कुछ इस प्रकार है। पॉल का पालन-पोषण एक फरीसी के रूप में हुआ था और उसका पालन-पोषण सावधानी से करने, कानून का पालन करने और पालन करने के लिए किया गया था, लेकिन जितना अधिक उसने कानून का पालन करने की कोशिश की, उतना ही वह उससे निराश हो गया, ऐसा करने की उसकी क्षमता, और अपनी विफलता के कारण उसे उतना ही अधिक दोषी महसूस हुआ। कानून का पालन करें, और उसकी अंतरात्मा में वह उतना ही अधिक परेशान हो गया जब तक कि अंततः उसने हार नहीं मान ली, और शायद भगवान की आत्मा उसके जीवन में काम कर रही थी और उसे प्रेरित कर रही थी, उसने अंततः हार मान ली और उसने स्वीकार किया कि वह इसे अपने आप नहीं कर सकता। और कानून का पालन नहीं कर सका, और इसने उसे यीशु मसीह पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया, और जिसने उसे कानून का पालन करने की अपनी क्षमता के विपरीत यीशु मसीह में विश्वास करने के लिए प्रेरित किया।

क्योंकि याद रखें, फिर से, जितना अधिक उसने इसे बनाए रखने की कोशिश की, वह उतना ही अधिक निराश हो गया, और जितना अधिक वह कानून और इसे बनाए रखने की अपनी क्षमता से निराश हो गया, उतना ही अधिक उसने अपनी विफलता के लिए अपने विवेक में दोषी महसूस किया, और अंततः उसे भगाया और उस पर दबाव डाला कि वह स्वयं को यीशु मसीह पर फेंक दे और परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार कर ले जो उसने मसीह के माध्यम से प्रदान किया है। अब, हालाँकि यह एक बहुत लोकप्रिय धारणा रही है, मुझे यकीन नहीं है कि जब आप वास्तव में नया नियम पढ़ते हैं तो यह सटीक है। और, उदाहरण के लिए, मुझे यहूदी धर्म में अपने जीवन के बारे में पॉल के दो विवरण पढ़ने दीजिए।

फिर, याद रखें, पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि पॉल कम से कम संतुष्ट होता जा रहा था और अधिक दोषी और निराश महसूस कर रहा था क्योंकि वह कानून का पालन नहीं कर सका, और अंततः, दूसरे शब्दों में, उसे यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए तैयार किया जा रहा था। उसका उद्धारकर्ता। लेकिन इन दोनों वृत्तांतों को सुनिए। हम उनमें से एक को गलातियों अध्याय

1 में पाते हैं, अन्य फिलिप्पियों 3 में, एक यहूदी के रूप में पॉल के जीवन के आत्मकथात्मक विवरण थे।

और गलातियों के अध्याय 1 में वह यही कहता है। वह कहते हैं कि आपने यहूदी धर्म में मेरे पहले जीवन के बारे में कोई संदेह नहीं सुना है। तो, पॉल वास्तव में अब एक ईसाई के रूप में लिख रहा है, लेकिन वह उससे पहले एक यहूदी के रूप में अपने जीवन का उल्लेख कर रहा है।

उन्होंने कहा कि आपने यहूदी धर्म में मेरे पहले जीवन के बारे में कोई संदेह नहीं सुना है। मैं चर्च पर हिंसक अत्याचार कर रहा था। फिर, वहाँ उसकी उत्साही प्रवृत्तियाँ हैं।

मैं परमेश्वर की कलीसिया पर हिंसक रूप से अत्याचार कर रहा था और उसे नष्ट करने का प्रयास कर रहा था। मैं यहूदी धर्म में अपने ही उम्र के कई लोगों से आगे बढ़ गया, क्योंकि मैं अपने पूर्वजों की परंपराओं के प्रति कहीं अधिक उत्साही था। परन्तु फिर वह आगे कहता है, परन्तु जब परमेश्वर ने, जिस ने मुझे उत्पन्न होने से पहिले ही अलग कर दिया, और अपनी कृपा से मुझे बुलाया, तो उसने प्रसन्न होकर अपने पुत्र को मुझ पर प्रगट किया, कि मैं अन्यजातियों में उसका प्रचार करूँ।

तो वह खाता नंबर एक है। फिलिप्पियों अध्याय 3, यहां एक और वृत्तांत है जहां पॉल ने आत्मकथात्मक तरीके से अपने पिछले जीवन का वर्णन किया है। फिर, वह एक ईसाई के रूप में लिख रहा है, लेकिन यहूदी धर्म में अपने पिछले जीवन का वर्णन कर रहा है।

वह कहता है, क्योंकि खतना करनेवाले हम ही हैं, जो आत्मा से, परमेश्वर की आत्मा से आराधना करते हैं, और यीशु मसीह पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। तब पौलुस कहता है, यद्यपि मेरे पास भी शरीर पर भरोसा रखने का कारण है। यदि किसी और के पास शारीरिक रूप से आश्वस्त होने का कारण है, तो मेरे पास और भी अधिक है।

आठवें दिन मेरा खतना किया गया। मैं इसराइल के लोगों का सदस्य था, बिन्यामीन के गोत्र का, इब्रानियों से पैदा हुआ एक हिब्रू कानून के मामले में एक फरीसी, जोश के मामले में, चर्च का उत्पीड़न करने वाला। व्यवस्था के अधीन धार्मिकता के संबंध में मैं निर्दोष था।

अब मैं आपसे पूछता हूँ, क्या यह किसी ऐसे व्यक्ति की तरह लग रहा है जो कानून का पालन करने की अपनी क्षमता से निराश था, या किसी ऐसे व्यक्ति की जिसका विवेक दोषी था, या जिसे कुछ लोगों ने आत्मविश्लेषी विवेक कहा है, जो अधिक से अधिक निराश और अधिक से अधिक जागरूक होता जा रहा था उसकी असमर्थता और कानून का पालन करने में उसकी विफलता, ताकि वह एक तरह से, सुसमाचार के लिए तैयार हो सके? मुझे ऐसा नहीं लगता। ऐसा लगता है जैसे पॉल को एक फरीसी के रूप में अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा था। वह कहता है, जब धार्मिकता की बात आई, तो मैं निर्दोष था।

गलातियों में, यह कहा गया है, वह कानून का पालन करने की क्षमता में अपने समकालीनों से कहीं आगे बढ़ गया। और वह अपने यहूदी धर्म में इतना आश्वस्त था कि वह चर्च को नष्ट करने का

भी प्रयास करेगा। तो, यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए तैयार हो रहा था।

यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे अपनी विफलता और दोषी विवेक का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्हें लगा कि वे कानून का पालन करने में असमर्थ हैं, और अंततः उन्होंने खुद को सुसमाचार में झोंक दिया। इसके बजाय, यह वह व्यक्ति है जो यहूदी धर्म में अपने जीवन में पूरी तरह से आश्वस्त है, और एकमात्र चीज जिसने पॉल को बदल दिया वह है जब यीशु मसीह ने उसके अस्तित्व में प्रवेश किया और उस दिन दमिश्क की सड़क पर उसे नीचे गिरा दिया। अन्यथा, वह उसके दिमाग की आखिरी बात थी।

वह यहूदी धर्म से तैयार नहीं हो रहा था या कम संतुष्ट हो रहा था। उन्हें अपने धर्म पर पूरा भरोसा था। लेकिन ऐसा तब तक नहीं था जब तक गलातियों 2 के अनुसार, यीशु मसीह ने स्वयं को प्रकट नहीं किया और उसके जीवन में प्रवेश नहीं किया, तब पॉल ने यहूदी धर्म में अपने पूर्व जीवन को कमतर आंका।

लेकिन जब तक मसीह का आगमन नहीं हुआ, पॉल कानून का पालन करने की अपनी क्षमता और यहूदी धर्म में अपने जीवन से पूरी तरह संतुष्ट था। तो फिर दमिश्क रोड पर पॉल के साथ क्या हुआ? सबसे अधिक संभावना है, दमिश्क की सड़क पर जो हुआ, वह घटना जो प्रेरितों के काम 9 में दर्ज है, जिसे पॉल गलाटियंस में संदर्भित करता है, वह यह था कि यह पॉल का रूपांतरण और कमीशन या बुलावा दोनों था। तो, एक ओर, बाकी गलातियों पर ध्यान दें।

जो खंड मैंने पढ़ा वह यहूदी धर्म में उनके जीवन का वर्णन करने के बाद का है। वह कहता है, परन्तु जब परमेश्वर ने, जिस ने मुझे उत्पन्न होने से पहिले ही अलग कर दिया, और अपनी कृपा से मुझे बुलाया, तो उसने प्रसन्न होकर अपने पुत्र को मुझ पर प्रगट किया, कि मैं अन्यजातियों में उसका प्रचार करूं। तो, उसके रूपांतरण के दोनों तत्व हैं, इसलिए वह एक धार्मिक प्रणाली से परिवर्तित हो गया है जो यीशु मसीहा को छोड़ देता है, जहां यीशु केंद्र में है।

यही उसका रूपांतरण है। फिर भी, एक ही समय में, यह एक कमीशनिंग है। उसे अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए नियुक्त किया गया है।

और यही कारण है कि अधिनियमों की पुस्तक में, उस मानचित्र में वे सभी मिशनरी यात्राएँ जो रोम में पॉल के साथ समाप्त होती हैं, पॉल केवल यीशु मसीह से अपना कमीशन पूरा कर रहा है, ईसाई धर्म में उसका रूपांतरण, सुसमाचार का प्रचार करने के लिए, यहूदियों को नहीं, बल्कि अन्यजातियों के लिए.

ठीक है, इतना कहने के बाद, पहला अक्षर जिसे हम देखना चाहते हैं, और मैं जो करने जा रहा हूँ वह है, मैं मेल सादृश्य को लेने जा रहा हूँ, और जिस तरह से मैं अक्षरों का परिचय दूंगा वह है, आइए प्रारंभिक चर्च से मेल का एक टुकड़ा खोलें। तो, आरंभिक चर्च के मेल का पहला टुकड़ा जिसे हम खोलना चाहते हैं वह रोमनों को संबोधित पत्र है।

उन सुसमाचारों के विपरीत, जिनमें पाठकों या लेखक का कोई संकेत नहीं है, पॉल के पत्रों में, जैसा कि पहली शताब्दी के पत्रों में विशिष्ट था, आम तौर पर लेखक या लेखकों का स्पष्ट संकेत और पाठकों का संकेत दोनों शामिल होते हैं। इसलिए, इन पत्रों को पढ़कर ही हम लेखक और पाठकों के बारे में काफी कुछ समझ सकते हैं। लेकिन रोम में चर्च को पत्र, वह पहला पत्र है जिसे हम खोलेंगे।

प्रारंभिक बिंदु यह पहचानना है कि हम पहले व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने रोमन पढ़ा है। न्यू टेस्टामेंट की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक, यदि आपने कभी रोमन्स को पढ़ा है और इसे समझने की कोशिश की है, तो किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक, आपका रोमन्स पढ़ना उन अन्य लोगों से प्रभावित हुआ है जिन्होंने इसे आपसे पहले पढ़ा है। रोमनों ने इतिहास के बहुत ही महत्वपूर्ण समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह है, क्या कोई जानता है वह कौन है? मार्टिन लूथर। मार्टिन लूथर जर्मन हैं। मार्टिन लूथर, हम कहेंगे लूथर।

मार्टिन लूथर और आप उन्हें द माइटी फोर्ट्रेस इज़ अवर गॉड जैसे भजनों के लेखक के रूप में जानते होंगे। मार्टिन लूथर की रोमन पुस्तक ने उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रोमनों की पुस्तक एक अर्थ में, सुधार की चिंगारी को भड़काने के लिए एक उत्प्रेरक थी।

रोमनों की पुस्तक लूथर में ही अच्छे कार्यों से नहीं बल्कि विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से मुक्ति के बारे में उनकी सोच बनी थी। और उसकी सोच जड़ जमाने लगी। इसलिए, रोमियों की पुस्तक ने, एक अर्थ में, लूथर के रूपांतरण और उसके पुनर्विचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कि सुसमाचार क्या था, विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उचित ठहराए जाने और बचाए जाने का क्या मतलब था, न कि कार्यों के माध्यम से।

और फिर से, सुप्रसिद्ध सुधार की चिंगारी। ऐसे कई अन्य व्यक्ति हैं, जिनके लिए रोमन्स ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ एक और है।

लगभग 50 वर्षों तक धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के बाद आप ऐसे दिखते हैं। क्या कोई जानता है कि यह कौन है? कार्ल बारथ। बहुत अच्छा।

मेरी राय में, कार्ल बारथ, एक प्रसिद्ध स्विस धर्मशास्त्री, ईसाई धर्म में सबसे प्रतिभाशाली विचारकों में से एक और सबसे प्रतिभाशाली धर्मशास्त्रीय विचारकों में से एक हैं। रोमनों की पुस्तक ने जर्मनी में कार्ल बारथ के स्वयं के सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहां उन्होंने उस समय के जर्मन उदारवाद के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की और रोमनों की पुस्तक में, एक तरह से, सुसमाचार में एक नई रुचि पाई। और फिर, लगभग अपने स्वयं के सुधार को चिंगारी।

तो, ईसाई धर्म के इतिहास में ये दो बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, लेकिन प्रतिभाशाली दिमाग जिनके दिमाग और सोच और धार्मिक प्रणाली और बाद के सुधार-प्रकार के आंदोलन कुछ हद तक रोमनों की किताब पढ़ने से प्रभावित थे, जहां उन्हें फिर से सामना करना पड़ा उन पर ईश्वर का

रहस्योद्घाटन और ईश्वर की कृपा। तो, ये दो हैं... और अन्य भी हैं। हालाँकि, ये दो व्यक्ति हैं, जब हम रोमनों की पुस्तक पढ़ते हैं तो हम उनके कंधों पर खड़े होते हैं।

और हम प्रदर्शित करेंगे कि यह कैसा है। अब, रोमियों की पुस्तक का लेखक कौन है? खैर, यह काफ़ी स्पष्ट है। यह पॉल के पत्रों के संग्रह में पहला पत्र है।

और वास्तव में, रोमियों की पहली कविता में, पॉल खुद को लेखक के रूप में नामित करता है। लेकिन अध्याय 16 में पत्र के बिल्कुल पीछे कुछ दिलचस्प है। और अध्याय 16 में, पॉल के कई पत्रों की तरह, वह अपने पत्रों को अभिवादन के साथ समाप्त करता है, कहते हैं, कुछ व्यक्तियों को नमस्कार।

और श्लोक 22, यहां अध्याय 16, श्लोक 22 है। मैं, टर्टियस, इस पत्र का लेखक, आपको प्रभु में नमस्कार करता हूँ। मुझे लगा कि पॉल ने यह पत्र लिखा है।

सबसे अधिक संभावना है, यह पहली शताब्दी में पत्र लिखने के एक बहुत ही सामान्य तरीके का प्रतिबिंब है। अर्थात्, एमानुएंसिस, जिसे मूलतः सचिव कहा जाता था, की सेवाओं को नियोजित करना बहुत, बहुत लोकप्रिय और आम था। और आप कुछ स्तर तक निर्देशित करेंगे, आमतौर पर आप अपना पत्र उन्हें निर्देशित करेंगे और वे आपका पत्र लिखेंगे।

प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि पत्र का लेखक स्वयं कभी-कभी पत्र के अंत में अपनी ही लिखावट में हस्ताक्षर करता है। और बहस यह थी कि क्या, आप जानते हैं, इसे लिखने के बाद, क्या पॉल इसे पढ़ेगा और कहेगा, हाँ, यह ठीक है, आगे बढ़ें और इसे भेज दें। लेकिन स्पष्ट रूप से, रोमनों में भी, हम पत्र तैयार करने की पहली शताब्दी की बहुत ही सामान्य पद्धति को प्रतिबिंबित करते हैं, जो कि एक सचिव या अमानुएंसिस की सेवाओं को नियोजित करना है।

और ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल यही कर रहा है। तो टर्टियस उसका सचिव था जिसने वास्तव में रोमनों की पुस्तक लिखी थी। इसलिए संभवतः पॉल ने पत्र में वही लिखवाया या कहा जो वह लिखवाना चाहता था।

और मेरा अनुमान है कि उनके लगभग सभी पत्र शायद इसी तरह लिखे और लिखे गए थे। बस, आपने पहली सदी में इसी तरह लिखा था। पौलुस ने रोमियों की पत्री क्यों लिखी? रोमन्स है, रोमन्स का पता लगाना कभी-कभी काफ़ी कठिन होता है क्योंकि रोमन्स कभी-कभी किसी विशिष्ट समस्या या संकट को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

वास्तव में, कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि रोमन मूलतः पॉल के सुसमाचार का सारांश है। और इसमें काफ़ी सच्चाई है। लेकिन बहुत से लोग पॉल को किसी विशिष्ट संकट या समस्या पर प्रतिक्रिया करते देखने से पीछे हट गए हैं जैसा कि वह अपने कुछ अन्य पत्रों में करता है।

लेकिन रोमन पढ़ते समय, पत्र से ही कम से कम तीन कारण उभर कर सामने आते हैं, कि पॉल ने ऐसा क्यों लिखा। गॉर्डन कॉलेज न्यू टेस्टामेंट सर्वेक्षण कक्षा को बात करने के लिए कुछ देने के अलावा। पहला एक मिशन है, एक मिशनात्मक उद्देश्य है।

अर्थात्, पॉल इसलिए लिखता है क्योंकि वह रोम को आगे की मिशनरी गतिविधि के आधार के रूप में सुरक्षित करना चाहता है। यानी, आपको रोमियों में यह समझ में आता है कि पॉल की अंतिम योजना सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पश्चिम की ओर बढ़ने की है, जहां तक संभव हो पश्चिम की ओर। और वह अपनी मिशनरी गतिविधि के आधार के रूप में रोम का उपयोग करना या रोम को सुरक्षित करना चाहता है।

और, इसलिए वह शायद कुछ मायनों में उनका समर्थन हासिल करने के लिए यह पत्र लिख रहे हैं। उदाहरण के लिए, पत्र के अंत में हम यही पढ़ते हैं। और यहीं ये बात स्पष्ट हो जाती है।

वह कहते हैं, यही कारण है कि मुझे अक्सर आपके, रोमन चर्च में आने से रोका गया है। मैं रोमन्स का अध्याय 15 पढ़ रहा हूँ। लेकिन अब इन क्षेत्रों में मेरे लिए कोई और जगह नहीं होने के कारण, मेरी इच्छा है कि कई वर्षों की तरह जब मैं स्पेन जाऊं तो आपके पास आऊं।

तो, पॉल का अंतिम लक्ष्य स्पेन जाना है। मुझे आशा है कि मैं अपनी यात्रा में तुम्हें देख पाऊंगा और थोड़ी देर के लिए तुम्हारे साथ का आनंद लेने के बाद तुम्हारे द्वारा मुझे भेजा जा सकूंगा। हालाँकि, वर्तमान में, मैं संतों के लिए एक मंत्रालय में यरूशलेम जा रहा हूँ क्योंकि मैसेडोनिया और अखाया को यरूशलेम में संतों के बीच गरीबों के साथ संसाधनों को साझा करने में खुशी हुई है।

वे ऐसा करने से प्रसन्न थे और वास्तव में वे इसके ऋणी हैं क्योंकि यदि अन्यजाति उनके आध्यात्मिक आशीर्वाद में भाग लेने आए हैं, तो उन्हें भौतिक रूप से भी उनकी सेवा करनी चाहिए। इसलिए, जब मैं इसे पूरा कर लूंगा और जो कुछ एकत्र किया गया है उन्हें उन्हें सौंप दूंगा, तो मैं आपके माध्यम से स्पेन के लिए प्रस्थान करूंगा। और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, मैं मसीह के आशीर्वाद की परिपूर्णता के साथ आऊंगा।

तो, क्या आपको चित्र मिला? पॉल को स्पेन जाने की उम्मीद है और ऐसा लगता है कि वह चाहते हैं कि रोमन चर्च उनके आसपास एकजुट हो और ऐसा करने में उनका समर्थन करे। इसलिए, रोमन्स लिखने का कारण एक मिशनात्मक है, केवल रोम का समर्थन प्राप्त करना और इसे अपनी गतिविधि के लिए आधार के रूप में सुरक्षित करना, जिससे उन्हें उम्मीद है कि यह उन्हें स्पेन तक ले जाएगा। दूसरा उद्देश्य क्षमाप्रार्थना है।

हाँ, एक धन उगाहने वाला पत्र। हाँ, वह इतनी दृढ़ता से भाषा का उपयोग नहीं करता है, लेकिन आप सही हैं, इसमें स्पष्ट रूप से शारीरिक समर्थन शामिल हो सकता है। जब हम फ़िलिपियंस की पुस्तक पर पहुँचते हैं, तो हम देखेंगे कि वह जिन कारणों से फ़िलिपियन्स लिखता है उनमें से एक यह है कि वह न केवल उन्हें धन्यवाद देता है, बल्कि उनके निरंतर वित्तीय समर्थन को प्रोत्साहित भी करता है।

और इसलिए, यह संभव है कि वह जो मांग रहा है वह न केवल उनकी प्रार्थना सहायता या कुछ और है, बल्कि वह स्पेन के लिए निकलते समय उनकी वित्तीय सहायता भी मांग रहा है। हाँ आप ठीक कह रहे हैं। हाँ, मुझे नहीं लगता कि यह बिल्कुल भी यादृच्छिक है।

मुझे लगता है, हाँ, शायद यह जानबूझकर किया गया है कि वह उन अन्य स्थानों का उल्लेख करता है जिन्होंने उसका समर्थन किया है। क्षमाप्रार्थना, एक और उद्देश्य जो कुछ लोगों ने रोमनों में देखा है वह क्षमाप्रार्थी उद्देश्य है। क्षमायाचना से मेरा मतलब यह नहीं है कि पॉल जो उपदेश देता है या सिखाता है उसके लिए उसे खेद है।

क्षमायाचना से हमारा तात्पर्य यह समझना और बचाव करना है कि वह क्या उपदेश देता है और वह क्या सोचता है। इसलिए, उनका समर्थन हासिल करने के लिए यह पहले वाले के साथ जा सकता है। फिर पॉल यह रेखांकित करता है कि वह क्या सिखाता है या उपदेश देता है, यह संभव है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, जैसा कि हमने कहा, बहुत से लोगों ने रोमियों में पौलुस द्वारा प्रचारित सुसमाचार की सबसे विस्तृत व्याख्याओं में से एक को देखा है। और इसलिए यह क्षमाप्रार्थी व्यक्ति के लिए उस सुसमाचार का वर्णन करने, व्याख्या करने और उसका बचाव करने का एक कारण प्रतीत होता है जिसे वह प्रचारित करेगा और जिसका वह प्रचार करता है। तीसरा, और शायद सबसे महत्वपूर्ण, देहाती उद्देश्य है।

वह यह है कि, विशेष रूप से जब आप रोमनों के अध्याय 14 पर आते हैं, तो पॉल यहूदी-गैर-यहूदी संबंधों में बहुत रुचि रखता है या बहुत चिंतित है, जिसे हमने देखा है कि अधिनियम की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है, एक प्रकार का चरमोत्कर्ष प्रेरितों के काम अध्याय 15 में यरूशलेम परिषद में। क्या यह याद है? लेकिन प्रेरितों के काम अध्याय 15, जेरूसलम परिषद में बहस इस बात पर थी कि अन्यजाति किस आधार पर परमेश्वर के लोग बनते हैं। यह मुद्दा रोमियों अध्याय 14 में सामने आता है।

तो जाहिर तौर पर, इसी मुद्दे पर यहूदी और गैर-यहूदी के बीच संबंधों में शायद कोई मुद्दा या समस्या थी। यहूदी और अन्यजाति किस आधार पर एक दूसरे से संबंधित हैं? और किस आधार पर अन्यजातियों को यहूदियों के साथ परमेश्वर के लोगों के रूप में स्वीकार किया जाएगा? और इसलिए, रोमनों का एक हिस्सा एक देहाती उद्देश्य था। अर्थात्, यह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच फूट की मण्डली में एक समस्या को संबोधित कर रहा था।

अब, इसका कारण क्या हो सकता है, एक बात हम जानते हैं, यदि रोमनों की पुस्तक लगभग 57 ईस्वी के आसपास लिखी गई थी या ऐसा ही कुछ। चिंता न करें, मैं आपसे परीक्षा में यह नहीं पूछूंगा। लेकिन मान लीजिए कि यह 57 ईस्वी के आसपास लिखा गया था।

लगभग आठ साल पहले, 49 ईस्वी में, क्लॉडियस, जो उस समय रोम के सम्राट थे, और आपके नोट्स की आखिरी शीट में, मेरे पास दूसरी शताब्दी से शुरू होने वाले सभी सम्राटों की एक सूची है। लेकिन क्लॉडियस, जो 49 ईस्वी में सम्राट था, ने एक राजाज्ञा जारी की। ऐसे कई सुझाव हैं कि क्यों, लेकिन एक आदेश है कि यहूदियों को रोम शहर से निष्कासित किया जाना चाहिए।

और इस प्रकार, सभी यहूदियों को निष्कासित कर दिया गया। जब 54 ई. में क्लॉडियस की मृत्यु हुई, तो उस आदेश को रद्द कर दिया गया और यहूदियों को रोम लौटने की अनुमति दे दी गई।

तब क्या हुआ होगा, कि लगभग पाँच वर्षों की उस अवधि के दौरान, चर्च का विकास जारी रहा होगा और बड़े पैमाने पर गैर-यहूदी घटना बनती रही होगी।

और अब जब यहूदी वापस आ रहे हैं और पाते हैं कि चर्च अधिक से अधिक विकसित हो रहा है और अधिक से अधिक गैर-यहूदी हो रहा है, तो यह इन समस्याओं में से कुछ का कारण हो सकता है जिन्हें पॉल को अब रोमनों की पुस्तक लिखते समय संबोधित करना होगा। और फिर, मेरे विचार से, यह रोमियों की पुस्तक के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक हो सकता है। और यह समझा सकता है कि वह यह प्रदर्शित करने के लिए अपने सुसमाचार का बचाव करने में इतना समय क्यों खर्च करता है कि यहूदी और अन्यजाति दोनों समान रूप से भगवान के सच्चे लोग हैं।

तो उन तीनों को पहचान सकें. फिर, कुछ अन्य उद्देश्य भी हो सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि ये तीनों उद्देश्य रोमनों की पुस्तक से सामने आए हैं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि पॉल का केवल एक ही उद्देश्य हो।

मेरा मतलब है, आप इसके बारे में सोचें। कभी-कभी जब आप पत्र लिखते हैं, तो आपके पास लिखने का हमेशा एक ही कारण नहीं होता है। आप कई बातें लिखने के लिए बैठ सकते हैं।

तो शायद पॉल सिर्फ एक चीज़ से अधिक करने की कोशिश कर रहा था। और इसलिए कम से कम ये तीनों यह वर्णन करते प्रतीत होते हैं कि पॉल ने बैठकर रोमियों की पुस्तक क्यों लिखी। ठीक है।

अब तक कोई प्रश्न? क्या किसी को यह समझ में आया कि रोमन क्यों लिखा जाता है? खैर, अगली चीज़ जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ वह अधिक व्यापक रूप से यह है कि हम समग्र रूप से रोमनों की व्याख्या कैसे करते हैं। लेकिन मैं जो कहने जा रहा हूँ वह पॉल की अन्य पुस्तकों, विशेषकर गैलाटियन्स को भी प्रभावित करता है। लेकिन पॉल ने इसे रोमनों में कई बार स्पष्ट किया है, और मैंने आपको मुख्य छंद दिए हैं।

वह ऐसे बयान देता है जैसे, हम विश्वास से न्यायसंगत या बचाए गए हैं, न कि कानून के कार्यों से। और इसलिए, मैंने आपको अध्याय तीन में दो महत्वपूर्ण अंश दिए हैं। 3:21 और 3:22 में, वह कहता है, अब कानून से अलग, और कानून के द्वारा वह सिर्फ किसी कानून या रोमन कानून का जिक्र नहीं कर रहा है।

मुझे लगता है कि वह पुराने नियम में मूसा के कानून की बात कर रहा है। कानून के अलावा, मूसा के कानून के अलावा, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता। तो, ध्यान दें कि वह धार्मिकता की तुलना किस प्रकार करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि वह कह रहा है कि ईश्वर की धार्मिकता है जो कानून, मूसा की व्यवस्था का पालन करने से नहीं आती है, बल्कि अब वह धार्मिकता है जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से आती है। और इसलिए, ध्यान दें कि वह अध्याय 3:28 में क्या कहता है, कुछ छंदों के बाद। क्योंकि कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अलावा मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराया जाता है।

और सवाल यह है कि पॉल का उस कथन से क्या मतलब था? उनका क्या मतलब था कि धार्मिकता केवल मसीह में विश्वास से आती है, कानून के कार्यों से नहीं? और पौलुस को यह विश्वास क्यों हुआ कि आप कानून के द्वारा नहीं, बल्कि केवल मसीह में विश्वास के द्वारा ही धर्मी हो सकते हैं? पौलुस इतना निश्चित क्यों था कि कानून का पालन करने से मुक्ति नहीं मिल सकती, बल्कि केवल यीशु मसीह में विश्वास हो सकता है? हम कानून के कार्यों के बजाय मसीह में विश्वास के द्वारा न्यायसंगत या धर्मी होने के बीच इस विरोधाभास को कैसे समझा सकते हैं? आप उस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं, फिर से, रोमनों के बारे में हमारी बातचीत की शुरुआत में वापस जाने के लिए, आप उस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं यह किसी भी चीज़ से अधिक इस बात पर निर्भर करता है कि आपको कैसे बड़ा किया गया है और रोमनों की पुस्तक पढ़ना सिखाया गया है। पहला व्यक्ति, मुझे देखने दीजिए, इस प्रश्न से लंबे समय तक जूझने वाले पहले व्यक्तियों में से एक, और मुझे जरूरी नहीं कहना चाहिए कि इससे जूझने वाला पहला व्यक्ति हो, लेकिन संभवतः वह व्यक्ति जिसके प्रति आपमें से अधिकांश लोग कृतज्ञता के ऋणी हैं। को, मार्टिन लूथर है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि लूथर ने इसे पढ़ा है, रोमियों, और उन्होंने कहा कि जिस तरह से आप समझते हैं कि विरोधाभास समस्या है, कानून पर भरोसा करने में समस्या यह है कि यह विधिवाद है।

वह अच्छे कार्य करके परमेश्वर का उद्धार अर्जित करने का प्रयास करना है। तो फिर पॉल किस चीज़ के खिलाफ़ बोल रहा है, जब वह कहता है कि आपको न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता है या आपको कानून का पालन करके बचाया नहीं जा सकता है, लेकिन केवल मसीह में विश्वास के द्वारा, पॉल कानूनवाद का जवाब दे रहा है। वह कह रहे हैं कि अच्छे काम करके किसी को बचाया नहीं जा सकता।

आप यह नहीं कर सकते। आप कमाने और ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए पर्याप्त कार्य नहीं कर सकते। इसलिए, एकमात्र विकल्प यह है कि अच्छे कार्यों को त्याग दिया जाए और केवल यीशु मसीह पर भरोसा किया जाए, यीशु मसीह और क्रूस पर उनकी मृत्यु और अपने उद्धार और अपने औचित्य के लिए उनके पुनरुत्थान पर विश्वास किया जाए।

हम बाद में औचित्य या औचित्य शब्द के बारे में अधिक बात करेंगे। लेकिन लूथर आश्चर्य था कि पॉल विधिवाद के मुद्दे को संबोधित कर रहा था जब उसने कहा कि आपको कानून के कार्यों से नहीं, बल्कि केवल विश्वास से बचाया जा सकता है। अर्थात्, आप परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित नहीं कर सकते।

आपको अच्छे कार्य करने से नहीं बचाया जा सकता है, बल्कि केवल उसे त्यागने और उसे त्यागने और केवल यीशु मसीह पर भरोसा करने से ही बचाया जा सकता है। तो आप में से कितने लोगों ने रोमन को इस तरह पढ़ा है या आप यही सोचते हैं? आप में से कुछ लोग हैं, ठीक है? यदि, फिर भी, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप मार्टिन लूथर से सीधे प्रभावित हुए हैं।

और किसी से भी अधिक, रोमन पढ़ने की उनकी विरासत ने उस तरीके को प्रभावित किया है जिस तरह आज हमें इसे पढ़ना सिखाया जाता है। अब, यह रोमनों के बारे में मार्टिन लूथर का

दृष्टिकोण है कि पॉल विधिवाद का मुकाबला कर रहा है, फिर से, मुख्य कारण यह है कि कानून उचित नहीं ठहरा सकता है कि कोई भी ऐसा नहीं कर सकता है। हम परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित नहीं कर सकते।

पॉल जिस समस्या का समाधान कर रहा है वह है कानून का पालन करके परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने का प्रयास करना। और आप ऐसा नहीं कर सकते. कोई भी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन आवश्यक सीमा तक नहीं कर सकता।

इसे कोई भी पूरी तरह से नहीं रख सकता. हम सब कम पड़ जाते हैं. इसलिए, एकमात्र सहारा मसीह और उसकी मृत्यु और क्रूस पर उसके कार्य पर भरोसा करना है।

यह दृष्टिकोण, वास्तव में, 20वीं शताब्दी तक प्रबल रहा। जब 1970 के दशक में ईपी सैंडर्स नाम के एक विद्वान थे. आपको बस अंतिम नाम सैंडर्स जानना होगा।

ईपी सैंडर्स. तो, यह, फिर से, कई सौ साल बाद, सैंडर्स आए और उन्होंने मार्टिन लूथर के रोमन पढ़ने के तरीके को चुनौती दी। जाहिर है, मार्टिन लूथर अब अपना बचाव करने के लिए वहां नहीं थे।

लेकिन उन्होंने लूथर के रास्ते को चुनौती दी और कहा, नहीं, लूथर ने पॉल को गलत समझा। लूथर अपनी स्थिति को वापस पॉल में पढ़ रहा था। और वह यह है कि, यदि आपको याद हो, लूथर का पालन-पोषण ऐसी स्थिति में हुआ था जहां उसने अपने चर्च के चारों ओर देखा और उसने सोचा कि वे इतने कानूनी हो गए हैं और भोग-विलास और यह और वह खरीदने पर निर्भर हैं।

और वह इससे और अपनी असमर्थता से बहुत अधिक निराश हो गया। और यह इसके माध्यम से है कि उसे इस संदेश के साथ नए सिरे से सामना करना पड़ा, आप देख सकते हैं कि जब वह कविता पढ़ता है, तो आप कानून के कार्यों से नहीं, बल्कि मसीह में विश्वास से बचाए जाते हैं। कि वह उसकी तुलना अपनी स्थिति से करेगा।

नहीं, हम जो अच्छे कार्य करते हैं उनसे हम बच नहीं पाते हैं। हम परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने का प्रयास करके नहीं बचाए गए हैं, बल्कि केवल परमेश्वर की कृपा से और यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से बचाए गए हैं। लेकिन सैंडर्स ने कहा, नहीं, लूथर और उनके अनुसरण करने वालों ने पुराने नियम और यहूदी धर्म के साहित्य पर ध्यान नहीं दिया है।

याद रखें, हमने यहूदी धर्म के कुछ साहित्य, जैसे मिश्राह, के बारे में थोड़ी बात की थी, और हमने साहित्य के कुछ अंशों, तल्मूड आदि का भी उल्लेख किया था। खैर, उन्होंने कहा, जब आप साहित्य पढ़ते हैं, तो पहली शताब्दी में यहूदियों का पता चलता है। और पुराने नियम में कानूनी नहीं थे। उन्होंने यह नहीं सोचा कि मूसा की व्यवस्था का पालन करके उन्होंने परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित किया है।

सैंडर्स ने कहा, इसके बजाय, उन्होंने सोचा, हर यहूदी ने सोचा होगा कि आप भगवान की कृपा से बच गए हैं। यह परमेश्वर ही था जिसने तुम्हें बचाया और बचाया। यह ईश्वर की कृपा थी कि उसने तुम्हें बचा लिया।

जहां से कानून आया, वह बस ईश्वर के प्रति आपकी आज्ञाकारिता को व्यक्त करने का एक तरीका था। कानून का पालन करना आपको अंदर नहीं ले गया। केवल अनुग्रह, भगवान की कृपा और विश्वास ही आपको अंदर ले आया।

लेकिन जिस चीज़ ने आपको वहां बनाए रखा वह कानून का पालन था। और इसलिए सूक्तिवाद शब्द। अर्थात्, सूक्तिवाद मूल रूप से कानून के कार्य हैं जो ईश्वर की कृपा की प्रतिक्रिया थे।

व्यवस्था के कार्यों ने यह प्रदर्शित किया कि परमेश्वर के लोगों को कैसे जीना था। जो लोग थे, हम आज कहेंगे, अनुग्रह द्वारा बचाए गए, जिन्होंने भगवान के लोगों के रूप में भगवान की कृपा का अनुभव किया था, यहूदी तब इसे व्यक्त करेंगे और कानून का पालन करके इसे जारी रखेंगे। फिर, उन्होंने इसे सूक्तिवाद कहा।

ठीक है, वाचागत सूक्तिवाद, लेकिन केवल सूक्तिवाद शब्द को याद रखें। यह विधिवाद के साथ एक अच्छी समानता बनाता है। तो सूक्तिवाद का अर्थ है कि कानून यह व्यक्त करने के लिए कार्य करता है कि यहूदियों को भगवान के लोगों के रूप में कैसे रहना है।

और इसलिए, उन्होंने कहा कि पॉल को उस समय कानून के साथ एकमात्र समस्या यह नहीं थी कि यह कानूनी था। एकमात्र समस्या यह थी कि यह ईसाई नहीं था। मसीह पहले ही आ चुके थे।

इसलिए, उन्होंने कहा कि मसीह के आगमन के साथ, यह निर्धारित करने के लिए कि परमेश्वर के लोग कौन हैं, कानून अब आवश्यक नहीं रह गया है। मूलतः, वह सैंडर्स का सुझाव था। इसलिए, पॉल इन कानूनी यहूदियों के खिलाफ नहीं बोल रहा है जो नियमों और विनियमों की एक सूची रखकर भगवान का अनुग्रह अर्जित करने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्होंने सोचा होगा कि वे भगवान की कृपा से बच गए हैं, और उन्होंने कानून को भगवान के लोगों के रूप में बने रहने, यहूदियों के रूप में अपना जीवन जीने के साधन के रूप में रखा होगा। इसलिए, जब पॉल कहता है कि आप कानून के कार्यों से नहीं, बल्कि मसीह में विश्वास से बचाए गए हैं, मूल रूप से वह क्या कह रहा है, अब जब मसीह आ गया है, तो कानून वास्तव में अब कोई भूमिका नहीं निभाता है। वह सैंडर्स था।

अब पहली का एक और टुकड़ा है। एक और व्यक्ति आया जिसका नाम जेम्स डन था, जो एक ब्रिटिश विद्वान था। और उन्होंने कहा कि सैंडर्स सही थे कि यहूदी इतने ठंडे, कठोर कानूनवादी नहीं थे जैसा कि हमने उन्हें बना दिया है।

वे सभी परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने का प्रयास कर रहे थे और सोचते थे कि वे किसी तरह परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त अच्छे कार्य कर सकते हैं और यही उन्हें बचाएगा।

लेकिन इसके बजाय, उन्होंने कहा कि सैंडर्स सही थे। यहूदियों ने सोचा कि वे ईश्वर की कृपा से बच गए हैं।

और तब कानून इसे बनाए रखने और भगवान के लोगों के रूप में अपनी पहचान व्यक्त करने का एक साधन मात्र था। लेकिन पॉल किस बात से इतना परेशान था? खैर, उन का जवाब यह था कि पॉल जिस समस्या को संबोधित कर रहा था वह कानूनवाद नहीं था, मार्टिन लूथर की तरह, भगवान का पक्ष अर्जित करने की कोशिश करना था। न ही समस्या सिर्फ सूक्तिवाद थी।

लेकिन उन्होंने कहा कि समस्या राष्ट्रवाद है। यानी, समस्या यह थी कि कानून पर ध्यान केंद्रित करने से यहूदी मुक्ति के वादों को यहूदी होने से बहुत करीब से जोड़ रहे थे। दूसरे शब्दों में, कठिनाई यह थी कि यहूदी कानून पर ध्यान केंद्रित करके, कानून को एक कारक बनाकर अन्यजातियों को बाहर कर रहे थे।

ताकि वे परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने के लिए कानून का उपयोग न कर रहे हों। वे मूल रूप से अन्यजातियों को बाहर करने और यह दिखाने के लिए कानून का उपयोग कर रहे थे कि भगवान के सच्चे लोग वे हैं जो मूसा के साथ अनुबंध में हैं, और वे मोज़ेक कानून का पालन करते हैं। यही बात मुझे परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचानती है।

इसलिए, यदि आप मूसा के कानून का पालन नहीं करते हैं, तो आप मुख्य पहचान चिह्न से चूक रहे हैं। आप उस महत्वपूर्ण विशेषता को खो रहे हैं जो आपको परमेश्वर के लोगों के रूप में चिह्नित करती है। तो, समस्या तब राष्ट्रवाद थी।

परमेश्वर के वादे, मुक्ति के वादे मूसा के कानून और एक यहूदी होने के साथ बहुत निकटता से जुड़े हुए थे। और पॉल इसे हटाना चाहता है और न केवल यहूदियों बल्कि अन्यजातियों को भी शामिल करने के वादों को खोलना चाहता है। तो, समस्या मूलतः राष्ट्रीय है, कानूनी नहीं, जैसा कि लूथर ने सोचा था।

लगभग, एक अर्थ में, उनकी पीठ के पीछे एक सूक था। मुझे लगता है कि मुझे यह सब गलत लगा, लेकिन वे ऐसा नहीं करने जा रहे हैं। आप ठीक कह रहे हैं।

हालाँकि, संभवतः, रोम में चर्च दोनों यहूदी रहे होंगे, वहाँ यहूदी और अन्यजाति दोनों रहे होंगे। वास्तव में, और यह बहुत अच्छी सोच है, मुझे लगता है कि आप सही तरीके से सोच रहे हैं, यह वही है जो विशेष रूप से गैर-ईसाई यहूदियों को कहा गया होगा, सबसे अधिक संभावना है कि पॉल इस बिंदु पर ईसाई यहूदियों को संबोधित कर रहे होंगे, जो चर्च के हैं। और इसे स्पष्ट करने के लिए धन्यवाद।

और वास्तव में, एक दिलचस्प बात यह है कि, हम सोचते हैं, रोम में सभी तरह से यहूदी हैं। लेकिन हाँ, यह कुछ ऐसा है जिसे विद्वान प्रवासी या फैलाव कहते हैं। यहूदी, पॉल ने जिन शहरों को संबोधित किया उनमें से अधिकांश में मजबूत यहूदी समुदाय थे।

यहां तक कि कुरिन्थ में भी, पॉल हमें बताता है कि कुरिन्थ में, कुरिन्थियों में, अधिनियमों में, हम इसके बारे में पढ़ते हैं। रोम सहित इनमें से अधिकांश शहरों में बड़ी संख्या में यहूदी आबादी रही होगी। तो यह एक बहुत अच्छा सवाल है।

सबसे अधिक संभावना है, पॉल एक ऐसे चर्च को संबोधित कर रहा है जिसमें यहूदी और गैर-यहूदी दोनों हैं। और कठिनाई यह हो सकती है कि उन के अनुसार, यहूदी अभी भी अपने पहचान चिह्नक के रूप में पुराने नियम के कानून से चिपके रहना चाहते हैं, और फिर चाहते हैं कि अन्यजाति भी उनका अनुसरण करें और मूसा के कानून का पालन करें। तो फिर, इसे अक्सर पॉल पर नया दृष्टिकोण या नया रूप कहा जाता है, या मार्टिन लूथर के समय से पॉल में अत्यधिक बदलाव आया है।

और अब जब उसे गैर के रूप में देखा जाता है, तो पॉल को हमें यह नहीं बताते हुए देखा जाता है कि आपको जितना हो सके उतने अच्छे काम करके अपना उद्धार अर्जित करने की कोशिश करना बंद कर देना चाहिए। इसके बजाय, समस्या बहुत अलग है, वह यहूदियों से कह रहा है कि उन्हें सुसमाचार को केवल उन लोगों तक सीमित करके गैर-यहूदियों को बाहर करना बंद करना होगा जो कानून का पालन करते हैं। इसे देखने का एक और तरीका, विशेष रूप से लूथर और सैंडर्स-डन, नया रूप, सैंडर्स और डन एक तरह से नया लुक हैं।

असल में, मुझे लगता है कि उन, पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पॉल पर नया परिप्रेक्ष्य या नया रूप शब्द का इस्तेमाल किया था। समस्या को देखने का दूसरा तरीका यह है, पुराने दृष्टिकोण के अनुसार मैं मूल रूप से लूथर का सुझाव दे रहा हूँ और नया दृष्टिकोण सैंडर्स और डन का है। पुराने दृष्टिकोण के अनुसार, पॉल जिस समस्या को संबोधित कर रहा था वह पाप के कारण कानून का पालन करने में मानवीय असमर्थता थी।

तो, जब पॉल कहता है कि आपको कानून के कार्यों से उचित नहीं ठहराया जा सकता है, तो क्यों? लूथर के अनुसार पाप के कारण कोई भी व्यक्ति आवश्यक सीमा तक व्यवस्था का पालन नहीं कर सकता। यदि आप कानून का पालन करके बचना चाहते हैं, तो आपको इसे पूरी तरह से बनाए रखना होगा। सारे पापों के कारण कोई भी ऐसा नहीं कर सकता।

इसलिए, कानून का पालन करके परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने का प्रयास करना विधिवाद है। और इसलिए, एकमात्र विकल्प यीशु मसीह में विश्वास है। तो, मुख्य समस्या पाप के कारण कानून का पालन करने की मानवीय क्षमता थी।

नये दृष्टिकोण के अनुसार मुख्य समस्या मानवीय योग्यता एवं पाप नहीं है। मुख्य समस्या यहूदी विशिष्टतावाद थी। अर्थात्, यहूदियों ने परमेश्वर के उद्धार के वादों को मूसा के कानून, यहूदी होने के साथ बहुत संकीर्ण रूप से जोड़कर अन्यजातियों को बाहर कर दिया।

इसलिए, अन्यजातियों को छोड़कर. उनकी तुलना करने का दूसरा तरीका यह देखना है कि वे दोनों अलग-अलग प्रश्न पूछ रहे हैं। लूथर के अनुसार, उन्होंने कहा कि पॉल जिस प्रश्न को संबोधित कर रहा था वह यह था कि एक पापी को पवित्र ईश्वर के ठीक सामने कैसे बनाया जाता है? एक

पापी के रूप में जो पवित्र परमेश्वर के सामने खड़ा है, मुझे कैसे सही बनाया गया है? मैं पवित्र परमेश्वर के साथ संबंध कैसे स्थापित कर सकता हूँ? तो, फोकस लंबवत है।

जबकि उन और सैंडर्स के साथ नए परिप्रेक्ष्य के तहत, वे कहते हैं, नहीं, यह मुख्य प्रश्न नहीं है जिसका पॉल उत्तर दे रहा है। इसके बजाय पॉल उत्तर दे रहा है, अन्यजातियों और यहूदियों का एक-दूसरे से क्या संबंध था? अन्यजातियों को परमेश्वर के लोगों में कैसे शामिल किया गया? क्या उन्हें कानून का पालन करना होगा? क्या उन्हें एक यहूदी की तरह जीवन जीना होगा? और अंत में, फोकस अलग है। लूथर के अनुसार, फोकस अधिक व्यक्तिगत था।

फिर, मैं एक पापी के रूप में पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे खड़ा हो सकता हूँ? जबकि नया नजरिया ज्यादा सांप्रदायिक है। यह ईश्वर से संबंधित व्यक्तियों के बारे में नहीं है। यह यहूदियों और अन्यजातियों के एक दूसरे से संबंधित होने के बारे में है।

परमेश्वर के सच्चे लोगों से संबंधित होने का क्या मतलब है? किस आधार पर अन्यजातियों को परमेश्वर की एक प्रजा में शामिल किया जाएगा? उन ने मूल रूप से दो को देखा। जेम्स उन ने कानून को मुख्य रूप से पहचान बैज या मार्कर के संदर्भ में देखा। अर्थात् इस कानून को विशेष रूप से पुरुषों के खतना, विशेष रूप से सब्बाथ और भोजन कानूनों के रूप में देखा जाता था।

ये वे चीज़ें हैं जो वास्तव में यहूदियों को ईश्वर के लोगों के रूप में चिह्नित करती हैं। इसने उन्हें अन्यजातियों से अलग कर दिया। और इसलिए फिर, जब पॉल कहता है कि कानून का पालन करके किसी को बचाया नहीं जा सकता है, तो मूल रूप से वह जो कह रहा है वह यह है कि मुक्ति को इन पहचान चिह्नों द्वारा प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है।

परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने का मतलब केवल यहूदी राष्ट्र से संबंधित होना और कानून का पालन करना नहीं है। और इन बैज, इन पहचान बैज, जैसे खतना और भोजन कानून, आदि के साथ पहचान करना, लेकिन अब यह पूरी तरह से यीशु मसीह में विश्वास से आता है।

इसलिए, यदि यह यीशु मसीह पर आधारित है, तो यहूदी और अन्यजाति दोनों अब समान रूप से परमेश्वर के लोग हो सकते हैं। अच्छा। तो, क्या आप दोनों दृष्टिकोणों के बीच अंतर देखते हैं? फिर, कोई बहुत व्यक्तिवादी है।

मैं पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे खड़ा होऊँ? कानूनवाद से नहीं, अच्छे काम करके परमेश्वर की कृपा अर्जित करने से नहीं, बल्कि केवल मसीह में विश्वास के द्वारा। वहीं दूसरा कहता है, नहीं, नहीं, मुद्दा यह है कि भगवान के सच्चे लोग कौन हैं? अन्यजातियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में कैसे स्वीकार किया जाएगा? क्या उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करना होगा? या क्या अन्यजाति परमेश्वर के लोग बन सकते हैं? क्या उन्हें मूसा की व्यवस्था से अलग भी शामिल किया जा सकता है? यही वह समस्या है जिसे न्यू पर्सपेक्टिव ने कहा कि पॉल रोमन में संबोधित कर रहा था। तो, मुझे लगता है कि आप आश्चर्यचकित होंगे कि हम किसका अनुसरण करने जा रहे हैं? एक संभावित समाधान, फिर से, मुझे आश्चर्य है कि हमें उनमें से किसी एक को अनिवार्य रूप से बाहर क्यों करना है।

तो, मैं नया परिप्रेक्ष्य बनूंगा और मैं बाहर नहीं जा रहा हूं। मैं उन दोनों को शामिल करूंगा। इसलिए, एक ओर, मुझे लगता है कि नया परिप्रेक्ष्य संभवतः सही है कि पॉल यहूदी-गैर-यहूदी संबंधों के मुद्दे को संबोधित कर रहा है।

यहूदी विशिष्टतावाद एक समस्या है। अन्यजातियों को मूसा के कानून का पालन करने के लिए एक संकेत के रूप में मजबूर करना कि वे भगवान के सच्चे लोगों से संबंधित हैं, एक ऐसा मुद्दा है जिसे पॉल संबोधित कर रहे हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि हम नए परिप्रेक्ष्य से सहमत हो सकते हैं।

और निश्चित रूप से, हमें प्रत्येक अंतिम यहूदी को नए नियम में कुछ ठंडे कठोर कानूनविद् के रूप में चित्रित नहीं करना चाहिए। उस दृष्टिकोण से, न्यू पर्सपेक्टिव ने शायद इसे सही कर लिया है, जैसा कि पॉल इस मुद्दे को संबोधित कर रहा है। परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं? किस आधार पर अन्यजातियों को परमेश्वर के लोगों में शामिल किया जाएगा? क्या उन्हें एक यहूदी के रूप में जीवन जीना होगा? क्या उन्हें एक पहचान चिह्नक के रूप में मूसा के कानून का पालन करना होगा जो उन्हें चिह्नित करता है और उन्हें भगवान के लोगों के रूप में अलग करता है? हालाँकि, इस मुद्दे को संबोधित करते हुए, मेरी राय में, यह मुद्दा दूसरे मुद्दे का हिस्सा है।

यह मुद्दा कि परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं, किस आधार पर अन्यजाति परमेश्वर के लोगों में शामिल होंगे, जब आप उन सवालों को उठाना शुरू करते हैं, तो यह दूसरे मुद्दे का हिस्सा है, मोक्ष के लिए क्या आवश्यक है? क्या यीशु मसीह में विश्वास पर्याप्त है, या किसी को मूसा के कानून पर भरोसा करना चाहिए? या हम कोई अन्य कार्य कह सकते हैं जो किसी को परमेश्वर के लोगों के रूप में अलग पहचान देगा। कोई कैसे... तो, यहूदी और अन्यजाति कैसे संबंधित हैं? परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने के लिए क्या आवश्यक है? अन्यजातियों से क्या अपेक्षित है, यदि वे परमेश्वर के लोगों से संबंधित हैं, तो यह एक बड़ा मुद्दा उठाता है। कोई पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे खड़ा हो सकता है? तो, मुझे लगता है, इस मामले में, ल्यूटर भी सही था।

इसलिए, मुझे लगता है कि रोमनों को पढ़ने के लिए उचित प्रतिक्रिया और उचित तरीका, मेरी राय में, दोनों दृष्टिकोणों को देखना है, और दोनों दृष्टिकोणों को रोमनों की पुस्तक में संबोधित किया जा रहा है। और इसलिए, हम इसे उस तरह से देखेंगे और उस परिप्रेक्ष्य से पढ़ेंगे। और यह मुद्दा, गलातियों की पुस्तक में फिर से उतनी ही तीव्रता से उठेगा।

ठीक है, कुछ अंश हैं जिन्हें मैं रोमन में थोड़ा और विस्तार से देखना चाहता हूं, लेकिन आपका सप्ताहांत अच्छा रहे और मैं आपसे सोमवार को मिलूंगा। अलविदा।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन का न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, न्यू एंड ओल्ड पॉल पर व्याख्यान 14 और रोमनों की पुस्तक का एक परिचय है।